Research Paper E-ISSN NO : 2455-295X | VOLUME : 8 | ISSUE : 3 | MARCH 2022

मालती जोशी' की कहानियों में मध्यवर्गीय जीवन का यथार्थ

राजपाल [1]

[1] प्राध्यापकः हिन्दी राउमावि फकीरवाली, तह॰ पदमपुर जिला श्रीगंगानगर (राज॰)

ABSTRACT:

KEYWORDS:

प्रस्तावनाः

साठोत्तरी काल नारी उत्थान एवं जागरण का काल माना जाता है। इस काल में नारी सिर्फ घर की चार दीवारियों में कैद न रहकर जीवन के सभी क्षेत्र में प्रगति के नई–नई स्थितियों को पार कर रही है। इसके साथ साहित्य के सभी क्षेत्रों को उसने अपनी प्रतिभा और संवेदना से उत्तरोत्तर समृद्ध किया है। इसी युग की महिला लेखिकाओं में 'मालती जोशी' का अपना एक अलग और अद्वितीय स्थान हैं। मालती जोशी की अधिकांश कहानियां 'पारिवारिक जीवन' पर लिखी हुई हैं। इसी कारण उनकी कहानियों में भारतीय परिवार, समाज, संस्कृति और परंपरा के दर्शन होते हैं। इनकी कहानियां परिवार से जुड़ी होने पर भी, इस क्षेत्र में उन्होंने अपनी अलग अनुपम प्रतिभा का परिचय दिया है। मालती जोशी ने अपनी कहानियों के द्वारा नारी समस्याओं का जीवन्त चित्रण अपनी गहरी अनुभुति और नये जीवन दृष्टि के आधार पर किया है। आपकी दृष्टि बहुत ही नवीन, रोचक, यर्थाथ और जीवन्त रही हैं।

मालती जोशी ने अपने कथा साहित्य में समकालीन सामाजिक परिवेश, नारी के विविध आयाम, नारी जीवन की संवेदनाएं, नारी की विद्रोह भावना और नारी मन को अपनी कहानियों के विविध माध्यम से स्वर दिया हैं। उन्होंने समकालीन सामाजिक कहानियों में अनेक ज्वलंत समस्या जैसेः– अनमेल विवाह की समस्या, बहुविवाह, बाल विवाह, पुराने एवं नये रिति रिवाजों आदि समस्यओं को जीवन्त रूप में चित्रित किया हैं। अतः निस्देह यह कहा जा सकता है, कि उन्होंने अपने कथा साहित्य में विविध विषयों को जीवन्त रूप से अभिव्यक्त कर अपनी अद्वितीय सर्जन प्रतिभा का जीवन्त परिचय दिया हैं। उनकी कहानियों में यर्थाथ वाद का साहित्य में समुचित और व्यवस्थित प्रयोग निस्देहः क्रान्ति रूप में हैं। साहित्य में सभी प्रकार का यर्थाथवाद, अतियर्थाथवाद, प्रकृत यर्थाथवाद, मनोवैज्ञानिक यथार्थवाद आदि। यर्थाथवाद के अनेक भेद क्यों न हों परंतु उसका लक्ष्य एक ही होता हैं। इस संसार में मनुष्य द्वारा जो देखा गया, जो भोगा गया या जो पाया या खोया गया। उसका यर्थाथ वर्णन करना, जो अनुभव किया गया, उसे आरम्भ से लेकर अन्तिम समय तक व्यवस्थित रूप में अभिव्यक्त करना। अतः उक्त सब को मालती जोशी ने बहुत ही सुनियोजित ढ़ग से अपने जीवन्त रूप में अभिव्यक्त किया हैं।

'मालती जोशी' का व्यक्तित्वः

'मालती जोशी का जन्म 4 जून 1938 को औरंगाबाद महाराष्ट्र में हुआ था। आपकी आरम्भिक शिक्षा यही हुई, तत्पश्चात् आपने आगरा विश्वविद्यालय उत्तरप्रदेश से 1956 में हिंदी विषय से स्नातकोत्तर की शिक्षा ग्रहण की। अब तक आपकी अनगिनत कहानियां, बाल कथाएं एवं उपन्यास प्रकाशित हो चुके हैं। इनमें से अनेक रचनाओं का विभिन्न भारतीय व विदेशी भाषाओं में अनुवाद हो चुका हैं। आपकी कहानियों को रंग मंच रेडियों दूरदर्शन पर नाटय, रूपान्तरण के रूप में प्रस्तुत हो चुके हैं। जैसे– जया बच्चन द्वारा दूरदर्शन धारावाहिक सात फेरे का निर्माण किया गया, एवं कुछ कहानियां गुलजार के दूरदर्शन धारावाहिक किरदार में एवं कुछ अन्य धारावाहिकों में शामिल हो चुकी हैं। मालती जोशी हिन्दी व मराठी भाषा की विभिन्न साहित्यिक संस्थाओं द्वारा सम्मानित हो चुकी हैं। जैसे– मध्यप्रदेश साहित्य सम्मेलन द्वारा वर्ष 1998 के भवभूति अंलकरण सम्मान से सम्मानित किया जा चुका हैं। मालती जोशी की लगभग सभी कहानियां मानव मन को छुने वाली होती हैं। अपनी कहानियों के बारे में मालती जोशी लिखती हैं.....जीवन की छोटी–छोटी अनुभुतियों को स्मरणीय क्षणों को मैं अपनी कहानियों में पिरोती रही हुँ, यह अनुभुतियां कभी मेरी अपनी होती है, तो कभी मेरे अपनो की और इन मेरे अपनो की संख्या और परिधि बहुत विस्तृत हैं। वैसे भी लेखक के लिए प्रभाव तो रहता ही नहीं.....और शायद इसलिए मेरी अधिकांश कहानियां 'मैं' के साथ शुरू होती हैं।

'मालती जोशी' का कृतित्वः

मालती जोशी द्वारा अनेकों कहानियां लिखी गई हैं, इनकी वर्ष 1971 में धर्म 'युग' में पहली कहानी प्रकाशित हुई। उसके बाद धीरे–धीरे मालती जोशी भारतीय पाठकों की चहेती लेखिका बन गई। हिंदी साहित्यकार प्रेमचंद की तरह मालती जोशी की कहानियों की भाषा सहज सरल और संवेदनशील हैं। मालती जोशी ने मध्यवर्गीय परिवारों की गहन मानवीय संवेदनाओं के साथ–साथ नारी मन के सुख एवं सुक्ष्म तंतुओं को रेखांकित किया हैं।

कहानी संग्रहः

1. मध्यांतर–1977, 2. पटाक्षेप–1978, 3. पराजय–1979, 4. एक घर सपनों का –1985, 5. विश्वास गाथा, 6. शापित शैशव तथा अन्य कहानियाँ–1996, 7. पिया पीर न जानी–1999, 8. औरत एक रात है–2001, 9. रहिमन धागा प्रेम का, 10– परख, 11. वो तेरा घर ये मेरा घर, 12. मिलियन डॉलर नोट तथा अन्य कहानियाँ, 13. ऑनर किलिंग और अन्य कहानियाँ, 14. स्नेह बंध तथा अन्य कहानियाँ

मध्यवर्ग की अवधारणाः

यह वर्ग मध्य व उच्चवर्ग का होता है इस वर्ग की अभिलाषाएं उच्च वर्ग के सामान ही होती है। इसी कारण यह वर्ग हर समय अर्थाभाव झेलता रहता है। प्रायः यह देखा जाता है कि अर्थाभाव के कारण यह वर्ग समाज के नैतिक आदर्श को खोता चला जा रहा है। अतः इस वर्ग की सामाजिकता एवं नैतिकता भी दाब पर लगी हुई दिखती है। इस वर्ग के अन्दर आने वाली व्यापकता को देखते हुए। इस वर्ग के बारे में निश्चत परिभाषा देना मुश्किल है।

परिभाषाः

इन्साइक्लोपीडिया ब्रिटेनिका में मध्यवर्ग की अवधारणा के बारे में लिखा गया है ''किसी विशिष्ट व्यक्ति का स्तर उसकी आय, सम्पति, जीविका, रहन–सहन का स्तर, शिक्षा उसकी व्यक्तिगत शक्ति जिसके आधार पर वह समाज के अन्य व्यक्तियों के बीच अपनी विशिष्ट स्थिति का निर्माण करता है।''

मध्यवर्ग का क्षेत्रः

मध्यवर्ग के क्षेत्र के अन्तर्गत यह वर्ग समाज के अन्य दो वर्गों की तुलना में बहुत बड़ा होता है, इस वर्ग में समाज के दोनो वर्गों के लोग यथा समय अवसर पाकर समाहित होते रहते है, इस कारण इस वर्ग की पकड़ समाज के सभी वर्गो में समान ढ़ग से होती है।

अतः इस वर्ग के विस्तार व व्यक्तियों के पास विलक्षण क्षमता के कारण समाजशास्त्रीयों ने इसको तीन भागों मे (उच्च मध्यवर्ग, मध्य मध्यवर्ग एवं निम्न मध्यवर्ग) में विभाजित किया हैं।

1. **उच्च मध्यवर्गः** समाज का यह वर्ग उच्च वर्ग से कटकर बनता है या यह

वहां से निर्मित होता है जहां समाज का मध्य मध्यवर्ग अपने वर्ग से छलाँगने की कोशिश में जुटा होता है। इस वर्ग की सामाजिक स्थिति अन्य वर्गो से मजबूत होती है।

2. **मध्यवर्गः** मध्यवर्ग पूर्व शताब्दी का बहुप्रचलित और परिचित शब्द है, इस शब्द के सुनने से सहज यह बात समझ में आने लगती है। समाज का ऐसा समुह जो न तो अधिक धनी होता है न ही अधिक गरीब। हिंदी लेखक यशपाल ने लिखा है किः– **''**मध्यम श्रेणी अनिश्चित स्थिति के लोगो की अद्भुत पंचमेल खिचड़ी है।''

3. **निम्न मध्यवर्गः** यह वर्ग सबसे खराब स्थिति में रहता है और यह बड़ी मुश्किल से जीवन यापन करता है, कथित परम्पराओं, कुलीनताओं एवं जर्जर रूढिग्रस्त मर्यादाओं का बोझ ढोने का काम इसी वर्ग के कंधो पर होता है। और बोझ ढोते–ढोते उसका दम निकलने लगता है।

डॉ॰ बी॰ बी॰ मिश्र ने मध्यवर्ग के सदस्यों की सूची इस प्रकार प्रस्तुत की हैः–

1. ''आधुनिक व्यापारी, फार्मो के संचालकों, सौदागरों (व्यापारियों) और एजेंटों का वर्ग जिसमें सक्रिय भागीदार और निर्देशक भी सम्मिलित है, पर इनमें ऊँचे, थोक व्यापारी निर्माता आदि की गणना न की जाये।
2. प्रबधंक, निरीक्षक, पर्यवेक्षक और बैंक–व्यवहार, तथा निर्माण व्यापार में नियुक्त तकनीकी कर्मचारी–वर्ग।
3. सिविल कर्मचारी और अन्य सरकारी कर्मचारियों का मुख्य दल, जिसमें कृषि, शिक्षा, सरकारी निर्माण विभाग, परिवहन, संचारण आदि विभागों के कर्मचारी सम्मिलित हैं।
4. भूमि के मध्य स्थिति मालिक यथा–किसान मातिक, राजस्व देने वाला किसान, बिना कमाई पर निर्भर रहने वाले या भूमि का आंशिक रूप से स्वयं प्रबंध करते हों।
5. माध्यमिक स्कूल के अध्यापक और स्थानीय निकायों के अधिकारी का उच्च स्तर, सामाजिक तथा राजनीतिक कार्यकर्ता।''

डॉ॰ बी॰ बी॰ मिश्र लिखित उपर्युक्त लम्बी सूची से स्पष्ट होता है कि मध्यवर्ग में विभिन्न क्षेत्र और आर्थिक स्तर के लोग सम्मिलित है उच्चवर्ग एवं निम्नवर्ग की तुलना में मध्यवर्ग का क्षेत्र अत्यन्त व्यापक है मध्यवर्ग समाज का बहुत बड़ा वर्ग है। समाज का शायद ही ऐसा कोई क्षेत्र है जहाँ मध्यवर्ग न हो।

'मालती जोशी' की कहानियों में मध्यवर्ग के यथार्थ का जीवन्त चित्रण एवं कहानियों की विशेषताएंः

मालती जोशी ने अपनी कई कहानियों में उन कामकाजी नारियों की और हमारा ध्यान आकर्षित किया है, जो घर और बाहर दोनों तरफ पिसती है। दो–दो हुक्मरानों के आदेशों पर नाचती है। वर्तमान युग में नारी केवल भोग्या या बच्चे जनने की मशीन ही नहीं रह गई अपितु रूपया कमाने का यंत्र भी बन गयी है। उसकी अर्जन क्षमता को जी भरकर निचोड़ा जा रहा है। ''स्वयंवर'' की प्रभा ने पिता की अकाल मृत्यु के बाद समस्त परिवार का बोझ अपने कंधे पर लिया था। जब तक अपने भाई–बहिनों को अपने पैरों पर खड़ा किया तब तक उसकी ब्याह की उम्र निकल जाती है। जो भी रिश्ते आते उसकी छोटी बहन माँगते। माँ तक नहीं चाहती थी कि उसकी शादी हो जाए। कारण प्रतिमास मिलने वाली मोटी तनख्वाह से उसे वंचित रहना पड़ेगा। कई बार उसका मन होता है कि आत्महत्या कर लें परन्तु बिन ब्याही का मरना भी निरापद नहीं होता। अतः यह गोपाल दा जैसे अपाहिज से प्रार्थना करती है कि उसे अपने चरणों में जगह दे–दे।

मालती जोशी ने वैसे तो अधिकांश कहानियाँ सास–बहू से सम्बन्धित लिखी है, जिसमें सास अधिकतर विधवा ही है। परन्तु दो कहानियाँ ऐसी हैं जिनमें विधवा नारी पर ही जोर दिया गया है। उसमें से ''सती'' कहानी में तो विधवा होने पर भी सारे रीति–रिवाजों का उल्लेख किया है। छोटा सा श्रंगार, मेंहदी–महावर रचाना, माँग से सिंदूर भरना फिर नदी पर ले जाकर चूडियाँ तोड़ना, खाड़–रगड़कर महावर छुड़वाना,सिंदूर धुबलाना आदि क्रियाएँ बड़ी क्रूरता से की जाती है। घर से जब सारे मेहमान जाने लगते हैं तब चाची को घूँघट निकालकर एक कोने में बिठा दिया जाता है। इसके पिछे यह संकेत होता है कि भविष्य में उसे ओरो की दया पर ही जीना होगा। ''मोरी रंग दी चूनरिया'' कहानी में तो उससे विधवा का नाटक करवाया जाता है। ताकि उसके पति के जमा पाँच लाख रूपये उनको मिल सकें।

सास, बहु, भाभी, देवर, बुआ इत्यादि सारे पारिवारिक रिश्ते साठोतर कहानी साहित्य से गायब हो गये थे। परन्तु मालती जोशी ने उसे फिर से अपने साहित्य में स्थान दिया संबंधो में आये बदलाव की ओर उनका ध्यान अवश्य ही गया है। स्नेहबध'' की बहु की आधुनिकता देखकर सास की सारी तमन्नाएं समाप्त सी हो गई थी, परन्तु ससुर के बिमार पड़ने पर उसकी योग्यता से सास के मन में भी वह घर कर जाती है।''सपने'' कहानी की लड़की के सपने में उससे भी कई गुणा बड़े व्यक्ति आते हैं। उससे शरारते करना, उसकी चोटी खिंचना, साइकिल चलाते समय ज्यादा ही आजादी लेना। ''सराफत'' कहानी में अपने से कई वर्ष बड़ी उम्र वाली औरत से युवा पुरूष का आकर्षण पत्नी की सफलता से ईर्ष्या आदि संबंधों में आयी नवीनता की और भी ध्यान केन्द्रित किया है। मालती जोशी ने अपनी अधिकांश कहानियों में नारी जीवन का आतंरिक और बाहरी जगत का चित्रण भी किया है। नारी हृदय का कौना–कौना उन्होंने छान मारा है। नारी का शायद ही कोई रूप ऐसा बचा हो जिसमें इन्होंने अपनी कलम न चलाई हों। विधवा, कलंकिता, बाझँ, विधवा, दहेज पीड़िता, परित्यकता, तलाकशुदा, अविवाहित प्रौढा, रसोई में कैद दुहाजू की पत्नी, अकरमणीय पुरूष की पत्नी, अपाहिज पुरूष की पत्नी, पति से तिरस्कृत नारी, नारी पर बलात्कार होते हुए देख खामोश रहने वाले मानसिक अपंग की पत्नी आदि पत्नीयों के विभिन्न रूपों को उजागर किया है। माँ बेटी, छोटी बहिन, बड़ी दीदी, विमाता, बुआ, भाभी, मौसी, चाची आदि को इन्होंने अपनी रचनाओं मे प्रस्तुत किया है। ''जोशी जी ने मोरी रंग दी चुनरिया'' कथा संग्रह में विधवा नारियों के विभिन्न पहलुओं की कहानियों को प्रस्तुत किया है। मालती जोशी की अपनी मर्यादाएं है। इनकी कहानियों में समकालीन विशेषताओं की झलक दृष्टि गोचर होती हैं। आठवें दशक की युवा पीढीओं में मालती जोशी की अपनी अलग ही पहचान हैं। मालती जोशी की कहानियां आधुनिक जीवन के संबंध में नारी के विभिन्न पहुलओं का दर्शन कराती हैं। मालती जोशी नारी स्वातंत्र्य की सुत्रधार हैं, इन्हीं विशेषताओं की झलक आपकी कहानियों में अंकित हुई हैं। नारी जीवन के सवालों को उठाकर विवाहिता, अविवाहिता, आर्थिक, सामाजिक, पारिवारिक स्तर पर जुझती नारी अतंरद्वन्द्वों से पीड़ित नारी आदि नारी जीवन के विविध रहस्यों का चित्राकंन करना इनकी कहानियों की विशेषता हैं। नारी शिक्षा की समस्या को लेकर लिखी गई कहानियाँ जैसेः आखिरी शर्त, सन्नाटा, रानियां, आधुनिक प्रवेश में नारी की अधिक शिक्षा के कारण संभावित समस्या का चित्रण करती है। मालती जोशी की कई कहानियाँ अविवाहित नारी की घुटन भरी जिन्दगी, वेदना, करूणा आदि को चित्रित करती हैं। जैसे आखिरी सौंगात कहानी में बदलते संबंध की समस्या पर लिखी कहानियों में अस्ताचल, हमको दिया प्रदेश आदि आती हैं। मालती जोशी की नारी की और देखने की दृष्टि परपंरावादी भी रही हैं। इनकी कई कहानियों में नारी का चित्रण दुर्बल, कमजोर, शोषित रूप में हुआ हैं। जैसेः 'मध्यातंर', 'आखरी सौगात', बोल री कठपुतली में नौकरी पेशा नारी का अतंरद्वंद्व चित्रित है। मालती जोशी की कहानियों में प्रसाद व माधुर्य गुण के साथ आवेश एवं आवेग की धारा स्पष्ट होती हैं। मालती जोशी की कहानियों में प्रसंगानुरूप अग्रेजी, उर्दू, मराठी एवं बुदेलखंडी तथा मालवा की भाषा के शब्दों का प्रयोग अधिक सम्पन्न और समृद्ध बना देता हैं। शैली की दृष्टि से मालती जोशी की कहानियों में आत्मचरितात्मक शैली का प्रयोग अधिक दिखाई पड़ता हैं। इसके अलावा पूर्वदीप्ति शैली, संवादात्मक शैली, वर्णन शैली, पत्र शैली आदि शैलियों का प्रयोग देखने को मिलता हैं। आपकी कहानियों के शीर्षक बहुत ही आकर्षक, रोचक, अर्थबोधक, कुतुहल वर्धक, साकेंतिक और काव्यमय अधिक हैं। सच में आपकी सभी कहानियाँ मध्यवर्गीय जीवन की तमाम समस्याओं का एक जीवन्त जीता जागता चित्रण प्रस्तुत करती दिखाई देती हैं।

इनके सम्पूर्ण साहित्य में अनुभूति की प्रमाणिकता की अभिव्यक्ति अवश्य हुई है। अपनी सीमित परिधि के अन्दर रहकर पारिवारिक और नारी जीवन की विविध समस्याओ को बोल–चाल सहज प्रवाहमयी भाषा में उजागर कर पाठको को आनन्द देने वाली मालती जोशी विराट साहित्य की धनी होकर भी इनका सफर अन्वरत जारी रहा हैं।

.........इस प्रकार मालती जोशी की कहानियों में मध्यवर्ग के पुरूष व नारी पात्र की तमाम समस्याओं का जीवन्त चित्रण प्रत्यक्ष रूप से हमें देखने को मिलता हैं। मालती जोशी ने अपनी आँखो से देखी घटना, कानों से सुनी बात पर विवेक अनुसार इसे जीवन की गाथा के रूप में अभिव्यजिंत किया हैं। अतः मालती जोशी जी ने मध्यवर्ग की उन तमाम पीड़ा को नजदीक से देखा ही नहीं, बल्कि भोगा भी था। और उस दौर में विशेषकर आस–पास में जीवन्त रूप में इनत माम समस्याओं को महसूस भी किया था। अतः मालती जोशी ने मध्यवर्गीय जीवन के यथार्थ को अपनी कहानियों में सुनियोजित, सुव्यवस्थित और अपने सफलत्तम रूप में प्रस्तुत किया हैं।

REFERENCES

1. मालती जोशी व्यक्तित्व एवं कृतित्व अल्लावक्स जमादार
2. बोलती कठपुतलीः मालती जोशी
3. हंस–राजेन्द्र यादव–नई दिल्ली
4. आर.एम मैकाइवर तथा सी. एच. पेज, पृष्ठ 348, प्र॰ सोसाइटी, प्र॰ वर्ष 1948

5. जिसंवर्ग इन्साइक्लोपीडिया ऑफ दि सोशल साइंसेज, जिंसवर्ग, भाग 3,4 पृ॰ 536

6. वगार्थ, अंक–24, मार्च 1997

7. यथार्थवाद–डॉ॰ शिवकुमार मिश्र

8. लेनिन फंडामेंटल ऑफ मार्कसिज्म लेनिनज्म, पृ॰150

9. हिन्दी उपन्यासों में मध्यवर्ग, डॉ॰ मंजुला सिंह, पृष्ठ 2, प्र॰ राजधानी प्रकाशन, वर्ष 1984

10. साठोतरी हिंदी कहनी–सं. शिवनारायण द्विवेदी

11. हिंदी कहानी में युगबोध– डॉ॰ मंजुलता सिंह पृ. स. 193 प्रकाशन 1985

12. ''सोशल'' क्लास इन अमेरिकन सोसाइटी, मिल्टन एम. जार्डन, पृ 03

13. भारतीय मध्यवर्ग, डॉ॰ श्याम सुन्दर घोष, पृ. सं. 2 लोकभारती प्र. न 1974

14. अमरकान्त का कथा साहित्य, बहादुर सिंह प्रमार, पृं.11, 2007

15. 'भारतीय समाज' संगीता वर्मा, पृ. 63, संजय प्रकाशन, 2007

16. स्वप्न और यथार्थः आजादी की आधी सदी, पूर्ण जोशी, पृ. 43 राजकमल प्रकाशन, वर्ष 2003